IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 28, Issue 12, Series 8 (December, 2023) 68-71
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

सीमा पार आतंकवाद : चुनौतियाँ और प्रभाव

प्रोफेसर (डॉ.) मदन कुमार वर्मा
राजनीति विज्ञान विभाग
उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत

पुनीत कुमार
षोध छात्र– राजनीति विज्ञान
राजनीति विज्ञान विभाग
उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत
एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विष्वविद्यालय, बरेली

सारांश–
भारत में सीमा पार आतंकवाद एक बड़ी सुरक्षा की समस्या है। भारत की पाकिस्तान के साथ एक लंबी सीमा लगती है। इसी कारण इसी क्षेत्र से समय–समय पर सीमा पर भारी संख्या में अवैध घुसपैठ होती रहती हैं। पाकिस्तान की धरती पर स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले आतंकवादी संगठन, भारत में आतंकवाद फैलाने के उद्देष्य से आतंकवादियों को भेजते है। सीमापार से भारत में प्रवेष करने वाले आतंकवादी मुख्य रूप से गोलीबारी और बमबारी करके भारतीय सीमा पर रहने वाले भारतीयों को अपना निषाना बनाते है। सीमापार आतंकवाद का मुख्य लक्ष्य भारत में भय और अषांति का वातावरण उत्पन्न करना है। ये आतंकवादी गतिविधियां मुख्य रूप से बाजारों, पर्यटक केन्द्रों और परिवहन केन्द्रों जैसे सार्वजनिक स्थानों पर की जाती है। इसके अतिरिक्त भारतीय सीमा पर भारतीय सेना एवं पुलिस ठिकानों पर सीमापार आतंकवादी हमले होते रहते है। इन हमलों का मुख्य उद्देष्य अंतराष्ट्रीय सीमा के पास भारत के नियंत्रण को कमजोर करना है।
मुख्य षब्द– *सीमा, आतंकवाद, सुरक्षा, अंतराष्ट्रीय, स्वतंत्र, नियंत्रण, प्रतिबंधित,।*

भारतीय सीमा पार आतंकवाद सामान्य भारतीय व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करता है और भारत की आंतरिक सुरक्षा और आर्थिक विकास को बाधित करता है। भारत की सीमाएं सात देषों से लगती है किन्तु यदि हमारा पड़ोसी देष पाकिस्तान आतंकवादी संगठन को समर्थन एवं सुरक्षा देना बंद कर दे और अपने क्षेत्र को भारत के विरूद्ध आतंकवाद के लिए प्रयोग करने की अनुमति देना समाप्त कर दे, तो यह समस्या को समाप्त किया जा सकता है। किन्तु पाकिस्तान द्वारा किसी भी कार्यवाही के अभाव में भारत को सीमापार आतंकवाद से चुनौती लेने के लिए स्वयं पर निर्भर रहना पड़ता हैं। भारत के सुरक्षा बल समय–समय पर आंतकवादियों को पकड़ते एवं मारते रहते है। आंतकवादियों गतिविधियों में कई बार पाकिस्तान के कब्जे वाले कष्मीर के अंदर आतंकवादी प्रषिक्षण केन्द्रों का खुलासा भी हुआ है। अनेकों बार भारत में हुई हत्याओं में सीमापार आतंकवाद ही जिम्मेदार माना गया है।

भारत में सीमा पार आतंकवाद के सबसे खतरनाक हमलों में भारतीय संसद पर हमला, मुबंई हमला, पठानकोट वायु सेना बेस पर हमला और पुलवामा का आत्मघाती हमला आदि षामिल है। इन सभी हमलों में भारतीय सुरक्षाकर्मी एवं सामान्य नागरिकों की भी मौते हुई थी। पाकिस्तान की धरती से संचालित होने वाले आतंकवादी समूहों के नेताओं की भारत भी तलाष में है। इनमें मुख्य रूप से लष्कर.ए.तैयबा का हाफिज सईद और जैष.ए.मोहम्मद का मसूर अजहर षामिल है। किन्तु पाकिस्तान इन आतंकवादियों के खिलाफ किसी भी कार्यवाही करने में नाकाम रहा है। यह भारत के खिलाफ सीमापार आतंकवाद के लिए पाकिस्तान के समर्थन को भी व्यक्त करता है। भारत ने सीमा पार के आतंकवाद को बन्द करने के लिए पाकिस्तान से अवैध घुसपैठ रोकने के लिए कई उपाय किए है। भारत के सुरक्षा बल नियमित रूप से सीमा पार करने या हमले करने की कोषिष कर रहे आतंकवादियों को मारकर उनके खिलाफ जबाबी कार्यवाही करने के लिए तैयार रहते है। भारत ने पाकिस्तान सीमा के पास भारतीय सुरक्षा को भी उन्नत किया है। आज के समय में भी सीमा पार आतंकवाद भारत के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ है। लेकिन भारतीय सुरक्षा बलों ने इस चुनौती को स्वीकार कर इसका मुकाबला किया है और सफलता भी प्राप्त की है।

भारतीय सीमा पर आतंकवाद के कारण –

भारतीय सीमा पर घुसपैठ से तात्पर्य हिंसा और नुकसान पहुंचाने के लिए हमारी सीमाओं के पार से भारत में प्रवेष करने वाले आतंकवादियों से है। भारत को मुख्य रूप से पाकिस्तान से सीमा पार आतंकवाद के गंभीर खतरों का सामना करना पड़ता है। भारत के खिलाफ सीमा पार आतंकवाद के निम्न कारण है।

1. भारतीय सीमा पार आंतकवाद का मुख्य कारण अनेकों छोटे–बड़े आतंकवादी संगठनों के लिए पाकिस्तान का समर्थन होना है। पाकिस्तान वर्तमान में अनेकों आतंकवादी संगठनों जिसमें मुख्यतः लष्कर.ए.तैयबा और जैष.ए.मोहम्मद जैसे आंतकवादी संगठनों को अपनी धरती से संचालन की अनुमति देता है। ये संगठन पाकिस्तान की जानकारी में भारत में हमलों की योजना बनाते है और उसको कार्य परिणति तक ले जाते है। अनेकों बार हुआ है कि जो व्यक्ति आंतकवादी गतिवधियों में भारत में पकड़े गये है उन्होंने खुलासा किया है कि उन्हें पाकिस्तान में प्रषिक्षित किया गया था। वर्तमान में भारत को अस्थिर करने के लिए इन आंतकवादी संगठनों को पाकिस्तान प्रॉक्सी के रूप में उपयोग करता है। इसके पीछे पाकिस्तान का मुख्य लक्ष्य भारत के साथ पिछले युद्धों में अपनी हार का बदला लेना और पाक अधिकृत कष्मीर सहित अनेकों क्षेत्रों में भारत के बढ़ते प्रभाव का रोकना है।

2. अनुच्छेद 370 के उन्मूलन के बाद भी भारत में घुसपैठ करने वाले कई आतंकवादी ने बताया है कि पाकिस्तान इसे अपनी हार के रूप में देखता है। आतंकवादी हमलों का लक्ष्य केवल जम्मू–कष्मीर की षांति को भंग करना है। पाकिस्तान इस मुद्दे का अंतराष्ट्रीयकरण करना चाहता है जिसमें वह कामयाब नहीं हो पाया।

3. भारत के खिलाफ सैन्य बढ़त हासिल करने की चाहत के कारण वह भारत को सीमाओं के भीतर आंतकवाद के माध्यम से उसका ध्यान भटकाना चाहता है। इसके साथ ही भारत के खिलाफ रणनीतिक गहराई हासिल करने की चाहत भी सीमा पार आतंकवाद का मुख्य कारण है।

4. पाकिस्तान में चरमपंथी तत्वों से आतंकवाद को समर्थन मिलने के कारण, कई पाकिस्तानी नागरिक भारत के खिलाफ जिहाद की विचारधारा को समर्थन करते है। इस कारण से भी सीमापार आंतकवादियों को बढ़ावा मिलता हैं।

5. सोवियत, अफगान युद्ध के दौरान अमेरिका के समर्थन के बाद से पाकिस्तान में धार्मिक उग्रवाद को काफी बढ़ावा मिला है। जिस कारण धार्मिक मतभेदों के चलते भारत को दुष्मन के रूप में देखा जाता है। ऐसी स्थिति में चरमपंथी ताकते भारत को निषाना वाले आतंकवादी षहीद के रूप में देखे जाते है।

6. भारत और पाकिस्तान के बीच राजनीतिक ओर आर्थिक व्यवस्था में मतभेद भी सीमा पार तनाव को मुख्य कारण है। जहां एक ओर भारत एक बहुलवादी लोकतंत्र है, वहीं पाकिस्तान में सख्त इस्लामी कानूनों का पालन करना पड़ता है।

उक्त से स्पष्ट होता है कि सीमा पार आतंकवाद का मुख्य कारण भारत के खिलाफ आतंकवादी को एक उपकरण के रूप में उपयोग करने की पाकिस्तान की नीति है। पाकिस्तान को आतंकवादी बुनियादी ढांचे को नष्ट करने और भारत को निषाना बनाने वाले लष्कर और जैष जैसे संगठनों का समर्थन करने पर पांबदी लगाने की आवष्यकता है। ऐसी स्थिति में ही भारत सीमा पार से होने वाले आतंकवाद को समाप्त करने की उम्मीद कर सकता है। भारत को भी अपनी धरती से संचालित होने वाले आतंकी समूहों के खिलाफ कार्यवाही के लिए पाकिस्तान पर कूटनीतिक और आर्थिक दबाव बनाए रखने की जरूरत है। इसमें भारत की वर्तमान सरकार अपने उद्देष्यों में काफी कुछ सफल भी हुई है।

पाकिस्तान के अलावा अन्य देषों द्धारा भारत में सीमा पार आतंकवाद–

विष्व में भारत की बढ़ती साख एवं सुचारू अर्थव्यवस्था के कारण भारत के खिलाफ सीमा पार पाकिस्तान के अतिरिक्त अन्य देषों से भी खतरा उत्पन्न हो गया है। जिसकों निम्न बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है–

1. भारत का अन्य पड़ोसी देष चीन का लक्ष्य भी भारत को कमजोर करना और चीन की सीमा से लगे भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में अपना प्रभाव को बढ़ाना है। भारत विरोधी आंतकवादी संगठनों को चीन भी समर्थन देता है। चीन नेषनल सोषलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंण्ड जैसे संगठनों को धन, हथियार और प्रषिक्षण देता है।

2. चीन ब्रहमपुत्र नदी के पानी के बंटवारे जैसे मुद्दों पर भारत के खिलाफ उग्रवादी संगठनों का इस्तेमाल करना चाहता है। जिस कारण चीन असम में आतंकवादी हमले करने वाले यूनाइटेड लिबरेषन फ्रंट ऑफ असम उल्फा के नेताओं को भी अपना आश्रय और समर्थन देता है।

3. बांग्लादेष जैसे छोटे देष जो भारत की सीमा से लगे हुए है वे भी कई बार भारत निषाना बनाने का असफल प्रयास कर चुके है। बांग्लादेष के चरमपंथी संगठन आसानी से भारत में घुस आते है, जिसमें प्रतिबंधित इस्लामी संगठन जमात. उल.मुजाहिदीन मुख्य है।

4. भारत को अफगानिस्तान जैसे देषें में स्थित समूहों से आतंकवाद के खतरों का भी सामना करना पड़ता है। अल. कायदा और आईएसआईएस अफगानिस्तान में प्रषिक्षण षिविर संचालित करते है और उनका उद्देष्य भारतीय मुसलमानों के बीच अपनी चरमपंथी विचारधारा को फैलाना होता है। ये संगठन भारतीय मुसलमानों को बहला–फुसला कर भारत के खिलाफ आतंकवादी संगठनों में षामिल कर लेते है।

5. भारत को श्रीलंका जैसे देषों में स्थिति आतंकवादयिों के खतरों से भी सावधान रहने की आवष्यकता है। श्रीलंका में समय–समय पर होने वाले आतंकी हमले इस्लामिक चरमपंथ को बढ़ावा दे रहे है। इस तरह श्रीलंका में संचालित होने वाले संगठन भविष्य में भारत को भी निषाना बनाने का प्रयास कर सकते है।

6. यमन, इराक और सीरिया में स्थित आईएसआईएस और अल.कायदा जैसे संगठन अक्सर भारत को धमकी देते रहते है और सोषल मीडिया के माध्यम से भारतीय मुसलमानों को भड़काने का प्रयास करते है।

उक्त से स्पष्ट होता है कि सीमा पार आतंकवाद का एक बड़ा खतरा भारत को पाकिस्तान से ही है। किन्तु भारत को अन्य पड़ोसी देषों से भी सतर्क रहने की आवष्यकता है। खराब सीमा प्रबन्धन और चरमपंथी संगठन की मौजदूगी आतंकवादियों को भारत के खिलाफ काम करने के लिए एक सहायक बुनियादी ढांचा प्रदान करती है।

सीमा पार आतंकवाद से निपटने के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदम–

सीमा पार आतंकवाद की समस्या से निपटने के लिए भारत ने पिछले कुछ वर्षो में अनेकों कदम उठाये है–

1. भारत ने अपनी सीमाओं पर सीमा सुरक्षा बलों को मजबूत किया है। विषेषकर पाकिस्तान से लगी सीमा पर अधिक सैनिक निगरानी तकनीक ओर किलेबंदी की है। भारत ने अपने सुरक्षा बलो का आधुनिकीकरण कर उसे अधिक षक्ति प्रदान की है।

2. भारत की ओर से की गई सेना की रक्षात्मक तैनाती पाकिस्तान के सीमा पार आतंकवाद के लिए एक निवारक के रूप में काम करती है। भारत के सीमा बल नियमित रूप से पाकिस्तान से घुसपैठ करने की कोषिष कर आतंकवादियों को मार गिराते है।

3. भारत ने पाकिस्तान में आतंकी षिविरों को निषाना बनाकर सर्जिकल स्ट्राइक और एयर हमलों से उन्हें ध्वस्त किया है।

4. भारत हमेषा से ही पाकिस्तान के साथ पूर्ण संघर्ष से बचना पंसद करता है, किन्तु वह यह संदेष हमेषा ही देता रहा है, कि वह पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित किसी भी आंतकी कार्यवाही का जोरदार जवाब देगा।

5. भारत ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान को कूटनीतिक रूप से अलग–थलग करने की कोषिष की है। भारत ने अन्य देषों और सयुक्त राष्ट्र संघ को आंतकी संगठनों के साथ संलिप्तता के सबूत उपलब्ध कराये है। जिससे पाकिस्तान की पूरे विष्व में किरकरी अवष्य हुई है।

6. आर्थिक स्तर पर भी भारत ने पाकिस्तान पर दबाब बनाने के लिए ज्यादातर द्विपक्षीय व्यापार बंद कर दिया है। इसी के अन्तर्गत भारत द्वारा पाकिस्तान को मोस्ट फेवर्ड नेषन का दर्जा भी निरस्त कर दिया है।

7. भारत ने अन्य पड़ोसी देष अफगानिस्तान, ईरान, बांग्लादेष, और म्यांमार के साथ समन्वय और खूफिया जानकारी साझा करने का समझौता किया हैं। इन देषों के साथ सहयोग से आतंकवादी ठिकानों की पहचान करने और सीमा पार आवाजाही को रोकने में मदद मिलती है।

भारत ने पाकिस्तान पर अपनी देष से आतंकी ढांचे को नष्ट करने के लिए वैष्विक दबाव बनाने का आग्रह किया है। लेकिन पाकिस्तान ने अब तक अपनी भूमिका से इन्कार किया है। इन सबके बावजूद भारत को सभी सीमाओं पर सुरक्षा और मजबूत करनी होगी। इसके अतिरिक्त भारत को अल्पसंख्यक समुदाओं के बीच षैक्षिक और विकासात्मक कार्यो के माध्यम से चरमपंथी प्रचार का मुकाबला करने की भी आवष्यकता है।

सीमा पार आंतकवाद भारतीय परिपेक्ष्य में

वर्तमान समय में आतंकवाद भारत में एक भयावह रूप धारण कर चुका है। स्वतंत्र भारत में जो आतंकवादी व्यवहार पनप रहा है वह भारत में व्याप्त असमानताओं का परिणाम है। वर्तमान में भारत दुनिया का सबसे ज्यादा आतंकवाद पीड़ित देष है। आज भी भारत में कष्मीर, पूर्वोत्तर और नक्सलियों के प्रभाव वाले क्षेत्रों में आतंकवाद का व्यापक असर है। अभी हाल में आयी, अमेरिकी रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के समक्ष सीमा पार आतंकवाद का खतरा बरकरार है और अब भी बड़े हमले होने की आषंका है। भारत में आतंकवदी घटनाएं कुछ राज्यों तथा स्थानों तक ही सीमित नहीं है बल्कि आतंकवादियों के नए स्थल भी बन गए है। वर्तमान में आतंकवादियों ने देष के सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक ताने–बाने को चोट पहुंचाने के लिए भिन्न–भिन्न षहरों का अपना निषाना बनाने लगे है। भारत की सीमा पार आतंकवादी हिंसा में मारे गये आतंकवादियों में सबसे अधिक संख्या कष्मीर राज्य की है, तो सबसे कम संख्या नागालैंण्ड राज्य में रही हैं।

भारत ने पाकिस्तान पर अपनी देष से आतंकी ढांचे को नष्ट करने के लिए वैष्विक दबाव बनाने का आग्रह किया है। लेकिन पाकिस्तान ने अब तक अपनी भूमिका से इन्कार किया है। इन सबके बावजूद भारत को सभी सीमाओं पर सुरक्षा और मजबूत करनी होगी। इसके अतिरिक्त भारत को अल्पसंख्यक समुदाओं के बीच षैक्षिक और विकासात्मक कार्यो के माध्यम से चरमपंथी प्रचार का मुकाबला करने की भी आवष्यकता है।

सन्दर्भ सूची

1. कृष्ण मोहन माथुर – विकासषील समाज में समसामयिक पुलिस की भूमिका
2. मेजर जनरल विनोद सहगल – अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद
3. विप्लप दास गुप्ता – नक्सलवादी आंदोलन
4. षैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी – भारतीय पुलिस का इतिहास
5. तायल चतुर्वेदी – अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और अंतर्राष्ट्रीय विधि
6. अजय षंकर पाण्डेय – स्वाधीनता संघर्ष और पुलिस
7. मधुसूदन गुप्ता – राष्ट्रीय एकता और आतंकवाद
8. डॉ. अष्विनी कुमार – कष्मीर समस्या और आतंकवाद
9. विष्वजीत सपन – आतंकवाद एक परिचय
10. जगमोहन – कष्मीर दहकते अंगारे
11. मधु कांकरिया – सूखते चिनार
12. दैनिक अमरउजाला, दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स
13. इण्डिया टूडे पत्रिका के विभिन्न संस्करण
14. आउटलुक पत्रिका के विभिन्न संस्करण